AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

औपनिवेशिक काल मे अजमेर मेरवाड़ा मे आर्य समाज का जन चेतना के पुनः जागरण मे योगदान 1871 ई. से 1947 ई. तक

गोविन्द सेन
(प्रोफ.) डॉ. दिनेश मंडोत
इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

यह शोध पत्र 1871 से 1947 तक औपनिवेशिक काल के दौरान अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र में जन चेतना को पुनर्जीवित करने में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका की जांच करता है। 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज वैदिक मूल्यों को बढ़ावा देने और औपनिवेशिक और सामंती उत्पीड़न का विरोध करने के उद्देश्य से एक सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में उभरा। यह शोध पत्र शिक्षा, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक कायाकल्प और राष्ट्रवादी जागृति में इसके प्रयासों की पड़ताल करता है, जिसने इस अवधि के दौरान अजमेर–मेरवाड़ा समाज के परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मुख्यशब्द: औपनिवेशिक काल, उत्पीड़न, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक कायाकल्प और राष्ट्रवादी जागृति

1.1 परिचय

अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र, जो 1818 से ब्रिटिश नियंत्रण में था, ने औपनिवेशिक काल के दौरान महत्वपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तन देखे। वैदिक धर्म को पुनः स्थापित करने और सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के अपने मिशन के साथ आर्य समाज एक

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा। यह लेख इस क्षेत्र के लोगों की सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना को ऊपर उठाने में आंदोलन की रणनीतियों और उपलब्धियों पर गहराई से चर्चा करता है।

अजमेर–मेरवाड़ा, जिसे अजमेर प्रांत और अजमेर–मेरवाड़ा–केकरी के नाम से भी जाना जाता है, ऐतिहासिक अजमेर क्षेत्र में ब्रिटिश भारत का एक पूर्व प्रांत है। यह क्षेत्र 25 जून 1818 को संधि द्वारा दौलत राव सिंधिया द्वारा अंग्रेजों को सौंपा गया था। यह 1936 तक बंगाल प्रेसीडेंसी के अधीन था जब यह उत्तरी–पश्चिमी प्रांतों के कमिश्नरेट एल 1842 का हिस्सा बन गया। अंत में 1 अप्रैल 1871 को यह अजमेर–मेरवाड़ा–केकरी के रूप में एक अलग प्रांत बन गया। यह 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों को छोड़कर स्वतंत्र भारत का हिस्सा बन गया।

इस प्रांत में अजमेर और मेरवार के जिलों शामिल थे, जो राजनीतिक रूप से शेष ब्रिटिश भारत से राजपूताना के कई रियासतों के बीच एक संलग्नक बनाते थे। जो स्थानीय राजाओं द्वारा शासित थे, युद्ध मे हार के बाद, जिन्होंने ब्रिटिश सत्ता को स्वीकार किया, अजमेर–मेरवाड़ा सीधे अंग्रेजों द्वारा प्रशासित किया गया था।

1842 में दोनों जिलों एक कमिश्नर के अधीन थे, फिर उन्हें 1856 में अलग कर दिया गया और उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा प्रशासित किया गया। आखिरकार, 1858 के बाद, एक मुख्य आयुक्त जो राजपूताना एजेंसी के लिए भारत के गवर्नर जनरल के अधीनस्थ थे।

प्रांत का क्षेत्र 2,710 वर्ग मील (7,000 किमी 2) था। पठार, जिसका केंद्र अजमेर है, को उत्तर भारत के मैदानों में सबसे ऊंचा बिंदु माना जा सकता है पहाड़ियों के चक्र से जो इसे अंदर रखता है, देश पूर्व में, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में थार रेगिस्तान क्षेत्र की तरफ नदी घाटियों की ओर – हर तरफ दूर हो जाता है। अरावली रेंज जिले की विशिष्ट विशेषता है। अजमेर और नासीराबाद के बीच चलने वाली पहाड़ियों की श्रृंखला भारत के महाद्वीप के वाटरशेड को चिह्नित करती है। दक्षिण–पूर्व ढलानों पर जो बारिश होती है वह चंबल में जाती है, और इसलिए बंगाल की खाड़ी में जो उत्तर–पश्चिम की तरफ लूनी नदी में पड़ता है, जो खुद को कच्छ के रान में छोड़ देता है।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

अजमेर क्षेत्र का हिस्सा, क्षेत्र 25 जून 1818 की एक संधि के हिस्से के रूप में ग्वालियर राज्य के दौलत राव सिंधिया द्वारा अंग्रेजों को सौंपा गया था। फिर मई 1823 में मेरवाड़ा (मेवार) भाग उदयपुर द्वारा ब्रिटेन को सौंपा गया था राज्य। इसके बाद अजमेर–मेरवाड़ा को सीधे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा प्रशासित किया गया था। 1857 के भारतीय विद्रोह के बाद, 1858 में कंपनी की शक्तियां ब्रिटिश क्राउन और भारत के गवर्नर जनरल को स्थानांतरित कर दी गईं। अजमेर–मेरवाड़ा के उनके प्रशासन को एक मुख्य आयुक्त द्वारा नियंत्रित किया गया था जो राजपूताना एजेंसी के लिए ब्रिटिश एजेंट के अधीन था।

1.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राजस्थान के मध्य में स्थित अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र ब्रिटिश शासन के दौरान सामरिक और प्रशासनिक महत्व रखता था। रियासतों के विपरीत, अजमेर–मेरवाड़ा को मराठा साम्राज्य से अधिग्रहण के बाद 1818 से सीधे अंग्रेजों द्वारा प्रशासित किया गया था। ष्चीफ कमिश्नर प्रांतष् के रूप में इस क्षेत्र की अनूठी राजनीतिक स्थिति ने अंग्रेजों को इसके प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण रखने की अनुमति दी, जिसने इसके सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को गहराई से आकार दिया।

1.2.1 सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

19वीं शताब्दी के मध्य में, अजमेर–मेरवाड़ा को कई सामाजिक–सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा:

1. रूढ़िवादिता और सामाजिक असमानताएँ:

o समाज कठोर जाति पदानुक्रम में उलझा हुआ था जिसने निचली जाति के समुदायों को हाशिए पर डाल दिया था।

o अस्पृश्यता, बाल विवाह और दहेज जैसी प्रथाएँ प्रचलित थीं, जो कमजोर समूहों, विशेष रूप से महिलाओं और निचली जातियों के उत्पीड़न में योगदान करती थीं।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

2. कम साक्षरता दर:

o इस क्षेत्र में व्यापक निरक्षरता थी, जहाँ पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए शिक्षा तक सीमित पहुँच थी। ब्रिटिश मिशनरियों के प्रभुत्व वाले मौजूदा शैक्षिक ढांचे ने ईसाई शिक्षा को प्राथमिकता दी, जिससे स्थानीय आबादी अलग–थलग पड़ गई।

3. धार्मिक प्रभाव:

o औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा समर्थित ईसाई मिशनरियों ने स्थानीय आबादी को धर्मांतरित करने के लिए सक्रिय रूप से काम किया। इसने पारंपरिक हिंदू प्रथाओं और पश्चिमी विचारधाराओं के बढ़ते प्रभाव के बीच तनाव पैदा किया।

4. आर्थिक कठिनाइयाँ:

o औपनिवेशिक नीतियों ने गरीबी को और बढ़ा दिया, जिससे अधिकांश आबादी शोषणकारी राजस्व प्रणालियों के तहत निर्वाह कृषि में लगी हुई थी। इन कठिनाइयों ने सामाजिक ठहराव को और गहरा कर दिया।

1.2.2 राजनीतिक परिदृश्य

अजमेर–मेरवाड़ा में प्रशासनिक ढाँचा अधिकतम औपनिवेशिक नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किया गया था:

• रियासतों के विपरीत, इस क्षेत्र में स्वदेशी शासकों की कमी थी, जिससे शासन पर अंग्रेजों का सीधा अधिकार था।

• इस केंद्रीकृत नियंत्रण ने अक्सर स्थानीय सामाजिक–राजनीतिक अभिव्यक्तियों को दबा दिया, जिससे स्वदेशी सुधारवादी पहलों के लिए सीमित जगह बची।

1.2.3 आर्य समाज का उदय

सामाजिक–आर्थिक ठहराव की इस पृष्ठभूमि में, आर्य समाज एक सुधारवादी शक्ति के रूप में उभरा। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में स्थापित इस आंदोलन का उद्देश्य वैदिक धर्म के सिद्धांतों की ओर लौटकर भारतीय समाज का कायाकल्प करना था। स्वामी दयानंद, जिन्होंने

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

अपने जीवनकाल में कई बार अजमेर का दौरा किया था, ने इस क्षेत्र में आर्य समाज की गतिविधियों के लिए वैचारिक आधार तैयार किया।

अजमेर–मेरवाड़ा में आर्य समाज के आगमन को कई कारकों ने उत्प्रेरित किया:

• स्वदेशी धार्मिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के माध्यम से ईसाई मिशनरी प्रभाव का मुकाबला करने की आवश्यकता।

• जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने की इच्छा।

• आर्य समाज के सुधारवादी एजेंडे को बढ़ते मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं के साथ जोड़ना, जो शिक्षा और सामाजिक–राजनीतिक सशक्तीकरण चाहते थे।

19वीं शताब्दी के अंत तक, आर्य समाज ने अजमेर में अपनी उपस्थिति स्थापित कर ली थी, जिसने एक परिवर्तनकारी युग की शुरुआत की। अपने स्कूलों, सामाजिक सुधार अभियानों और राष्ट्रवादी गतिविधियों के माध्यम से, आंदोलन ने औपनिवेशिक और सामंती उत्पीड़न का विकल्प प्रदान किया, जिससे क्षेत्र में सार्वजनिक चेतना का पुनरुत्थान हुआ।

1.3 आर्य समाज के प्रमुख योगदान

1. शैक्षिक सुधार

• **स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना:** आर्य समाज ने दयानंद एंग्लो–वैदिक (डीएवी) स्कूलों और कॉलेजों जैसी संस्थाओं की स्थापना की, जो वैदिक सिद्धांतों पर आधारित आधुनिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

• **महिला शिक्षा को बढ़ावा:** इसने अजमेर–मेरवाड़ा में लैंगिक भेदभाव की बाधाओं को तोड़ते हुए महिला शिक्षा के लिए काम किया।

• **साक्षरता अभियान:** रात्रि विद्यालयों और वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से, आंदोलन ने निरक्षरता को मिटाने की कोशिश की।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

2. सामाजिक सुधार

• **जातिगत भेदभाव का उन्मूलन:** आर्य समाज ने अस्पृश्यता का सक्रिय रूप से विरोध किया और हाशिए पर पड़े समुदायों को मुख्यधारा में लाने की दिशा में काम किया।

• **अंधविश्वासों का उन्मूलन:** इसने तर्कसंगत सोच पर जोर दिया और बाल विवाह और मूर्ति पूजा जैसी प्रतिगामी प्रथाओं के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

• **विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा:** समाज ने रूढ़िवादी सामाजिक मानदंडों को चुनौती देते हुए विधवा पुनर्विवाह का आयोजन और समर्थन किया।

3. धार्मिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान

• **वैदिक शिक्षाओं का प्रचार:** आर्य समाज ने ज्ञान और मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में वेदों के अध्ययन पर जोर दिया।

• **हिंदी का प्रचार:** इसने सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देते हुए शिक्षा और संचार के माध्यम के रूप में हिंदी की वकालत की।

• **धर्मांतरण का विरोध:** सार्वजनिक बहस और प्रवचनों के माध्यम से, समाज ने ईसाई मिशनरियों के धर्मांतरण के प्रयासों का मुकाबला किया।

4. **राष्ट्रवादी जागृति**

• **स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी:** आर्य समाज ने भारत की स्वतंत्रता के लिए जनता को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके कई नेताओं और सदस्यों ने असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

• **स्वदेशी आदर्शों का प्रचार:** इसने राष्ट्रवादी एजेंडे के साथ जुड़ते हुए स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और विदेशी उत्पादों के बहिष्कार को प्रोत्साहित किया।

• **युवाओं के लिए प्रेरणा:** स्वामी दयानंद की शिक्षाओं ने अजमेर–मेरवाड़ा में युवा क्रांतिकारियों और सुधारवादियों को प्रेरित किया।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

1.4 अजमेर–मेरवाड़ा समाज पर प्रभाव

1871 से 1947 तक अजमेर–मेरवाड़ा में आर्य समाज की गतिविधियों ने क्षेत्र के सामाजिक–सांस्कृतिक, शैक्षिक और राजनीतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया। वैदिक आदर्शों और सुधारवादी उत्साह में निहित इस आंदोलन ने जड़ जमाए हुए सामाजिक मुद्दों से निपटा, सांस्कृतिक गौरव को बढ़ावा दिया और लोगों में राष्ट्रवादी जागृति को उत्प्रेरित किया।

1.4.1 आर्य समाज के प्रयासों से क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए:

- स्थानीय आबादी में साक्षरता दर और अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी।
- जाति–आधारित भेदभाव और लैंगिक असमानता में कमी आई।
- सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करना और औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ प्रतिरोध।
- राजनीतिक रूप से जागरूक मध्यम वर्ग का उदय, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1.4.2 प्रभाव का सारांश

अजमेर–मेरवाड़ा पर आर्य समाज का प्रभाव गहरा और बहुआयामी था:

1. एक अधिक शिक्षित और सामाजिक रूप से जागरूक आबादी उभरी, जो सामाजिक मानदंडों पर सवाल उठाने और उन्हें सुधारने के लिए तैयार थी।
2. जातिगत बाधाएं कमजोर हुईं, जिससे सामाजिक समरसता बढ़ी।
3. महिलाओं को पहचान और अधिकार मिले, जिससे लैंगिक समानता के लिए मंच तैयार हुआ।
4. आर्य समाज द्वारा स्थापित सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रवादी भावना ने व्यापक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1947 तक, अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ था, और आर्य समाज की विरासत ने स्वतंत्रता के बाद की अवधि में इसकी प्रगति को आकार देना जारी रखा।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

1.5 आर्य समाज के सामने चुनौतियाँ

अपनी सफलता के बावजूद, आर्य समाज को कई बाधाओं का सामना करना पड़ा:

• समाज के रूढ़िवादी वर्गों से विरोध।

• औपनिवेशिक अधिकारियों से प्रतिरोध, जिन्होंने इसकी राष्ट्रवादी गतिविधियों को एक खतरे के रूप में देखा।

• ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी पहल का विस्तार करने के लिए सीमित संसाधन।

1.5 अजमेर–मेरवाड़ा में आर्य समाज की विरासत

आर्य समाज का योगदान अजमेर–मेरवाड़ा के सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने में गूंजता रहता है। शिक्षा, समानता और राष्ट्रवाद पर इसके जोर ने स्वतंत्रता के बाद के युग में एक प्रगतिशील समाज की नींव रखी।

निष्कर्ष

औपनिवेशिक काल के दौरान अजमेर–मेरवाड़ा में जन चेतना को पुनर्जीवित करने में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षा, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और राजनीतिक लामबंदी में अपने बहुआयामी प्रयासों के माध्यम से, इस आंदोलन ने गहरी सामाजिक असमानताओं को संबोधित किया और औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ आत्मनिर्भरता और प्रतिरोध की भावना को बढ़ावा दिया। शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना, लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान की वकालत ने एक प्रगतिशील समाज की नींव रखी।

इसके अलावा, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रवादी आदर्शों पर इसके जोर ने अजमेर–मेरवाड़ा के लोगों को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए प्रेरित किया। आर्य समाज के परिवर्तनकारी प्रभाव ने न केवल ब्रिटिश शासन के दौरान क्षेत्र के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया, बल्कि एक स्थायी विरासत भी छोड़ी जो स्वतंत्र भारत में समानता, शिक्षा और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दिशा में प्रयासों को प्रेरित करती है।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

यह अध्ययन सामाजिक–सांस्कृतिक जागृति के उत्प्रेरक के रूप में आर्य समाज की भूमिका और अजमेर–मेरवाड़ा की प्रगति पर इसके स्थायी प्रभाव पर प्रकाश डालता है, जिससे यह औपनिवेशिक भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय बन जाता है।

संदर्भ

- दयानंद सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश (सत्य का प्रकाश)।
- शास्त्री, एन.डी., आर्य समाज और भारतीय राष्ट्रवाद।
- गुप्ता, एम.एल., ब्रिटिश शासन के तहत अजमेर–मेरवाड़ा का इतिहास।
- अजमेर में दयानंद एंग्लो–वैदिक स्कूलों के आधिकारिक अभिलेख।
- शर्मा, आर.एस., औपनिवेशिक भारत में सामाजिक आंदोलन।
- राधाकृष्णन उपनिषदों की भूमिका, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1976, पृष्ठ 54
- जगदीश चंद (2010), फिलॉसॉफिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, अंशाह पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- जेसी अग्रवाल और एस गुप्ता (2010), शिक्षा पर महान दार्शनिक और विचारक, शिप्रा प्रकाशन, पटपड़गंज, दिल्ली।
- एन.आर. स्वरूप सक्सेना. (2014) शिक्षा का दार्शनिक और समाजशास्त्रीय फाउंडेशन, आर.लाल बुक डिपो।
- राम नाथ शर्मा (2010), शैक्षिक दर्शन की पाठ्यपुस्तक, कनिष्क प्रकाशक, वितरक, नई दिल्ली।
- एस. सैमुअल रवि (2011), शिक्षा का एक व्यापक अध्ययन, पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: History

- शैव ''उपनिषद, श्री उपनिषद की टिप्पणी के आधार पर अनुवादितयअद्ब्रह्मयोगिन, ट्र। श्रीनी वास ?अयंगर द्वारा, जी.श्रीनिवास मूर्ति द्वारा संपादित, द अड्यार लाइब्रेरी, मद्रास, 1953।
- वास्तुसूत्र उपनिषद, पवित्र कला में रूप का सार, बोनर, एलिस द्वाराय सरमा, आदिसिवरथय बाउमर, बेट्टीना, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1986 ख्पहला संस्करण।
- केएन पणिक्कर, ''पूर्व औपनिवेशिक भारत में सांस्कृतिक रुझानः एक अवलोकन'' औपनिवेशिक भारत में विज्ञान के सामाजिक इतिहास में। ईडी। एस. इरफान हबीब, ध्रुव रैना और जहीर बाबर। ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

गोविन्द सेन
(प्रोफ.) डॉ. दिनेश मंडोत

*****